जनवाद= मानव–मानव संवाद; लक्ष्य– मानव उपकार की आशा

उपकार– मानव लक्ष्य के अर्थ में दिशा निश्चित होना

जनवाद का आशय – मानव अपने अधिकार, दायित्व, कर्तव्य को मानव लक्ष्य के अर्थ में निश्चित करे एवं कार्य व्यवहार में प्रमाणित करे; समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी पूर्वक लक्ष्य द्वय को भागीदारी के रूप मे प्रमाणित करने के लिए प्रेरक

अध्याय 1

व्यवहारात्मक जनवाद क्यों?

जनवाद– जनचर्चा के मुद्दे

भय, प्रलोभन, आस्था, संघर्ष ⟶ विश्वास

उन्मादत्रय ⟶ न्याय, धर्म, सत्य से नियंत्रित प्रिय, हित, लाभ

शासन ⟶ व्यवस्था

संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था, आचार संहिता का ध्रुवीकरण, निश्चयन

राज्य, धर्म, अर्थ एवं शिक्षा संस्कार संबंधी सार्वभौम निष्कर्ष

जानवरों में पीढ़ी दर पीढ़ी कार्यकलाप यथावत्

मानव परंपरा में पीढ़ी दर पीढ़ी कार्यकलाप में भिन्नता/परिवर्तन – विचार, कार्य, व्यवहार, सुविधा, संग्रह, बहुभोग, उपभोग विधा में

परिवर्तन का कारण– कल्पनाशीलता + कर्मस्वतंत्रता

वर्तमान स्थिति :–

चाहने एवं होने (युद्ध, समुदाय) में अंतर्विरोध; अपेक्षा, कथन व कार्य में अंतर्विरोध (चारो गद्दी– शिक्षा, धर्म, राज्य, व्यापार में)

प्राकृतिक व पाशविक भय कम, मानव में निहित अमानवीयता का भय अधिक

रोमांचिकता का मुद्दा :– सुविधा–संग्रह; भोग, अतिभोग, बहुभोग;

राष्ट्र–अस्मिता के नाम से शोषण,द्रोह, युद्ध अथवा, भक्ति–विरक्ति, व्यक्तिवादी मानसिकता

संपूर्ण प्रचार तंत्र– अपराध व शृंगारिकता के संदर्भ में

भोगवाद व त्यागवाद की चर्चा

स्वीकृत होने वाले/प्रयोजनात्मक तथ्यों को चर्चास्पद बनाने में परम्पराएँ असमर्थ

राज्य संविधान– गलती, अपराध, युद्ध को इसी से रोकना

मानव त्व सहित व्यवस्था पूर्वक जीने में असमर्थ; नैसर्गिक असंतुलन

परस्पर समुदायों में धार्मिक, सामाजिक, राज्यनैतिक एवं सांस्कृतिक प्रभेद

परस्पर मानवीयतापूर्ण व्यवस्था सहज–

(सार्वभौम) आचार संहिता का सूत्र व व्याख्या नहीं

व्यवस्था का निश्चयन पूंजीवादी, साम्यवादी आधारों पर फलित नहीं; दोनों में भोग व संग्रह की मानसिकता

अंतहीन विकास; शासन–प्रशासन के भ्रमित तरीके; पर्याप्त जन सुविधा, व्यक्ति विकास, समानता का आश्वासन; वोट और नोट का गठबंधन

सत्ताधारी क्षणिक संतुष्ट; जिन्हें भागीदारी नहीं मिली वे असंतुष्ट

सामरिक तंत्र से लैस देशों द्वारा कमजोर देशों का शोषण

सार्वभौम शिक्षा, संविधान, जनमानसिकता को पाने की विधा ढूँढ़ने में असमर्थ

विकसित, विकासशील एवं अविकसित देश; आधार – सामरिक यंत्र, तंत्र; संग्रह–सुविधा, भोग, बहुभोग, अतिभोग

अधिकांश लोग कार्यकारी मानसिकता से रिक्त एवं संचालनकारी मानसिकता से संबद्ध

आहार (शाक ⟶ मांस) से आवास से वस्त्र से महत्वाकांक्षा की वस्तु में दिलचस्पी अधिक; कारण लाभोन्मादी व्यापार तंत्र

उपयोगिताशील वस्तुओं का मूल्यांकन प्रतीक मुद्रा से; प्रतीक प्राप्ति नहीं

हर व्यक्ति, परिवार की सशंकित मानसिकता

दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन यंत्रों से परस्पर चर्चा, मिलना सरल

सामान्य आकांक्षा की वस्तुओं के उत्पादन में यंत्रों की उपादेयता

सहज–आकांक्षा :–

समाधान(भ्रान्ति–मुक्ति), समृद्धि(विपन्नता मुक्ति), अभय(भय–मुक्ति), उपकार, सहयोगिता; सुखी होना

जन संघर्ष का कारण :– गलती, अपराध, युद्ध, शोषण, भोगवादी कार्यकलाप; राहतस्थली– शृंगारिकता, भोग, अतिभोग

वाद प्रवृत्ति से कम योजना प्रवृत्ति से कम कार्य प्रवृत्ति; कार्य प्रवृत्ति के अनन्तर फल प्रवृत्ति

जनवाद में व्यवस्थारूपी व्यवहार चर्चा परम आवश्यक

मानव को अभी व्यवस्था में जीने एवं अनुकूल प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता

अध्याय – 2

जनवाद= संवाद के मुद्दे क्या–क्या हैं?

जनवाद का लक्ष्य– निष्कर्षों को मानव परंपरा में स्थापित करना

अभिनय और उसका परिणाम :

साहित्य एवं कला– अपराध और शृंगारिकता का वर्णन; आनंदरूपी रस की संप्रेषणा

नियम, न्याय, व्यवस्था, सत्य, व्यापक, अनंत; नाम से हर व्यक्ति में स्वीकृत, अर्थ से संपन्न होना प्रतीक्षित

आवेशः काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य

मानव लक्ष्य, प्रामाणिकता, व्यवस्थामूलक जनचर्चा, कला, साहित्य, प्रकाशन, प्रदर्शन, शिक्षा–संस्कार व्यवस्था परा आधारित जनवाद की आवश्यकता

प्रयोजन, यथार्थ की चर्चा की आवश्यकता

वर्तमान में तकनीकी का प्रयोग :– मानव एवं नैसर्गिक शोषण, संग्रह–सुविधा हेतु

अंग प्रत्यारोपण का दुरूपयोग; दवाओं का साइड इफेक्ट; ज्यादातर रोग असाध्य व कारण अज्ञात

विज्ञान व तकनीकी का दुष्प्रभावः धरती से कोयला, खनिज तेल का अपहरण, ताप वृद्धि, ध्रुवीय बर्फ का पिघलना, ओजोन परत का घटना, समुद्र का जल स्तर बढ़ना, जल स्तर का नीचे जाना, बढ़ती गर्मी

गणतंत्र से न्याय सम्मत निष्कर्ष की अपेक्षा; गणतंत्र के किसी संविधान में अच्छे चरित्र की स्पष्टता सूत्र, व्याख्या, अध्ययन नहीं

वर्तमान में चारों गद्दी/परंपरा भ्रष्ट

पुरातत्व विधा से पत्थर, पहाड़,जीवाश्म आदि की आयु का अनुमान

अपेक्षा :– हर मानव धरती व पर्यावरण के संतुलन के पक्ष में व असंतुलन विपक्ष में है; सांस्कृतिक/सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक गतियों में सामरस्यता, समाधान, निश्चित गम्यता जिनसे सुंदर सामाजिकता सिद्ध हो सके

वर्तमान में

राजनैतिक गतिविधि– यश, पद, धन में

आर्थिक गतिविधि सुविधा संग्रह में

सांस्कृतिक,सामाजिक गतिविधि–समुदाय मानसिकता, रूढ़ियों में फँसा हुआ

यश= पहचान– राजनेता, कलाकार, डाकू;

पहचान के माध्यम–रेडियो, टेलीविजन, पत्र–पत्रिका, उपन्यास

व्यवहारात्मक जनवाद में जनचर्चा व संवाद सहज प्रस्ताव

1. धर्म– मानव धर्म स्पष्ट होना
2. शिक्षा– मानव चेतना मूल्य शिक्षा में पारंगत प्रमाण होना
3. राज्य– अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज विधि विधान राज्य, राष्ट्र चेतना में पारंगत, प्रमाण होना

अध्याय 3

व्यवहारात्मक जनवाद का स्वरूप (मानव व्यवहार)

लक्ष्य, दिशा, प्रवृत्ति

वर्तमान में चर्चा के मुख्य बिन्दु – युद्ध, व्यापार, संग्रह–सुविधा, भक्ति–विरक्ति, अपराध, शृंगारिकता

मानव, समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व को ही वरता है। वरने का तात्पर्य सुनने मात्र से भुली चीज स्मरण में आने से है।

मानव में दो विपरीत ध्रव – संवेदनशीलता एवं संभावित, अपेक्षित संज्ञानशीलता

संवेदनशीलता– शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इन्द्रियों के अनुकूलता–प्रतिकूलता की स्वीकृति

संज्ञानशीलता– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व की स्वीकृति

समीचीन :– सहजता से सुलभ होने की संभावना; पास में है और प्रयोग करना की एकमात्र कार्य है।

विज्ञानी व आदर्शवादी के हिसाब से सर्वशुभ संभव नहीं है।

संघर्ष आवश्यक, इतने ज्ञानी से नहीं हुआ तो कहाँ होगा

वर्तमान मानसिकता – संग्रह, सुविधा, भोग, बहुभोग, अधिकाधिक जीने का इच्छुक; कम स `कम उत्पादन कार्य में भाग लेने का इच्छुक, मानव की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ते जाना; धरती बीमार, धरती का शोषण, दोहन

संवेदनशील विधि से गति– अव्यवस्था की ओर

वर्तमान में मूल्य रक्षा का प्रमाण – रूढ़ियाँ, परंपरा, नाच–गाना, कपड़ा, आभूषण, नित्यकर्म, नैमित्यिक कर्म की रक्षा

विज्ञान : घटना को विश्लेषित कर मानव पुनः घटित करा सके, ऐसी अस्मिता/

अपेक्षा; गति हेतु ऊर्जा वाष्प विधि, तेल ईंधन विधि, विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा

नियोजन विधि, परमाणु विस्फोट नियोजन विधि

प्रश्नः– मानव का प्रयोजन क्या? इसी संदर्भ में अस्तित्व समग्र का अध्ययन

अस्तित्व समग्र= व्यापक में संपृक्त इकाई समूह, इकाइयाँ 4 अवस्था में , हर अवस्था में परस्परपूरकता

शेष प्रकृति का प्रयोजन एवं उनमें संतुलन को पहचानना जनचर्चा का एक आवश्यक मुद्दा; मानव में स्वीकृति पूर्वक निश्चयन, होने की स्वीकृति, स्वीकृति ही संवाद की वस्तु

मानव की पहचानः ज्ञान, विवेक, विज्ञान संपन्न व्यवहार, कर्म प्रतिष्ठा; इसकी सार्थकता–मानव लक्ष्य पूर्ति

जन–संवाद का लक्ष्य/आशय – किसी निष्कर्ष तक पहुँचाना, मानव उद्देश्यों के आधार पर प्रवर्तित होता है। विश्लेषण और निष्कर्ष के रूप में सार्थकता के अर्थ में प्रेरक

जन संवाद एक अनुस्यूत क्रिया; मनाकार को साकार करने के क्रम में जनसंवाद

वर्तमान में शिक्षक वेतनभोगी, सम्मान व पुरस्कार हेतु प्रवर्तित

धन की प्यास (सुविधा संग्रह के अर्थ में) का तृप्ति बिन्दु नहीं

युद्ध व उसके लिए किया गया धन का नियोजन निरर्थक; मुक्ति का उपाय– मानव की एक इकाई के रूप में पहचान

मानव शरीर सप्त धातुओं से रचित और रचना विधि हर व्यक्ति में समान

बच्चों में: न्याय की अपेक्षा– पोषण, संरक्षण क्रम में

सही कार्य–व्यवहार की इच्छा– आज्ञापालन, अनुसरण, सहयोग, अनुकरण के रूप में

सत्यवक्ता– शब्दों को बोलना; जो भी देखा–सुना है, उसे बोलने में अभ्यस्त

जनचर्चा के मुद्दे – मानवकांक्षा कैसे सुनिश्चित/प्रमाणित हो; सार्थकता के अर्थ में व्यवहार एक मुद्दा; व्यवहार में संबंध को पहचानना सहज, कम से कम विश्वास मूल्य प्रमाणित

मानव की परस्परता में व्यवहार व प्राकृतिक ऐश्वर्य की परस्परता में उत्पादन कार्य; संबंध सह–अस्तित्व में ही प्रमाणित

प्रयोजन, लक्ष्य, प्रक्रिया को पहचानने के अर्थ में हर संवाद सार्थक

संबंध में मूल्य– कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, वात्सल्य, ममता,सम्मान,स्नेह

मानव परिवार से अखण्ड समाज तक समाधान सूत्र को फैलाना – व्यवहारात्मक जनवाद का प्राणतत्व

जागृत मानव अपने प्रतिभा और व्यक्तित्व की पहचान बनाने में तत्काल समर्थ; जिम्मेदारी जागृत व्यक्ति की

जागृति = जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

पहचानना, निर्वाह करना– पदार्थ अवस्था में परिणाम–अनुषंगी; प्राण अवस्था में बीज–अनुषंगी; दोनों पूरकता पूर्वक उत्सवित

इन तथ्यों पर संवाद पूर्वक अगली पीढ़ी को बोधगम्य बनाना संवाद का सार्थकता

<u>मानव व्यवहार और पूरकता :</u>

समाधान= क्यों, कैसे का सहज उत्तर;

कितना– फल, परिणाम और आवश्यकता की तृप्ति के अर्थ में

समाधान हेतु संवाद

क्यों– मूल कारण, प्रयोजन;कैसे– प्रक्रिया, प्रणाली, पद्धति के सूत्रों के आधार पर

व्यवहार परस्परता में मूल्यों का निर्वाह करने के आधार पर सफल

मूल्यों का निर्वाह संबंधों के आधार पर; संबंधों की पहचान प्रवृत्ति शिशुकाल से संबंध=पूर्णता के अर्थ में अनुबंधित रहना

वर्तमान में विश्वास अर्थात् संबंध की पहचान और उसकी निरंतरता बनाए रखने में निष्ठा– ईमानदारी होने का प्रमाण

पहचान और उसकी निरंतरता स्वयं जिम्मेदारी के रूप में स्पष्ट

परिवार व्यवस्था में प्रमाण और समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना और समृद्धि का साक्ष्य स्पष्ट होना

ऐसी प्रतिष्ठा चेतना विकास, मूल्य शिक्षा–संस्कार(ज्ञानत्रय का स्पष्ट होना) से अनुप्राणित होना, रहना स्वाभाविक

सार्थकताः

मानव परंपरा में परिवार सभा व्यवस्था से विश्व परिवार सभा व्यवस्था के रूप में समग्र व्यवस्था को प्रमाणित करना (5 आयामों के क्रियाकलाप के रूप में)

समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी

सार्थकता ही संवाद का आधार और गम्यस्थली; वार्तालाप का किसी लक्ष्य/ प्रयोजन के सिलसिले में नियंत्रित होना

भाषा का अर्थ– वस्तु, घटना, फल, परिणाम, क्रियाकलाप, व्यवहार–प्रक्रिया के रूप में

जीवन आकांक्षा एवं मानव आकांक्षा परस्परता में पूरक

विवेक की सार्थकता लक्ष्य को पहचानने के रूप में; विवेचनापूर्वक ही लक्ष्य निर्धारित

विज्ञान की सार्थकता मानव/जीवन लक्ष्य के लिए दिशा और प्रक्रिया को स्पष्ट करने, होने व प्रमाणित होने के रूप में; विश्लेषण पूर्वक ही दिशा निर्धारित

मानव परंपरा में सुखी होने के लिए व्यवहार व प्रयोग करना

व्यवहार व प्रयोग संवेदनशीलता में अनुकूलता–प्रतिकूलता के रूप में; इसमें सुख भासने के आधार पर ही सुख की निरंतरता की अपेक्षा; निरंतरता कल्पना व प्रयोग; प्रमाणों का लोक व्यापीकरण

पहचानना, प्रयोजनशील होना, प्रमाणित होना, प्रमाण परंपरा बनना

जीव संसार जीने की आशा के आधार पर जीवनी क्रम में; स्वास्थ्य के अर्थ में अनुकूलता–प्रतिकूलता; आहार–विहार पद्धति से शरीर स्वस्थता प्रमाणित; परंतु समाधान के लिए शोध, अनुसंधान नहीं; शरीर को जीवन मान कर जीना– इन सबका बोध मानव को

मानव में सुखी होने की चाहना; समझदारी का फलन समाधान का फलन सुख

ज्ञानद्वय – मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार पूर्वक सर्वसुलभ

हर यथास्थिति का निश्चित आचरण; हर परिणाम, परिवर्तन, विकास व जागृत के उपरांत भी यथास्थितियाँ बनी ही रहती हैं।

युद्ध व भोग विधि से सुख की निरंतरता नहीं; समझदारी के अभाव में स्वस्थ शरीर का प्रयोग संघर्ष, युद्ध व भोग हेतु

मनव में आहार, विहार, व्यवहार पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करने की आवश्यकता

समाधान जीवनगत/शरीरगत वस्तु है?

आस्था = न समझते हुए मानने की चेष्टा

काल=क्रिया/वस्तु की अवधि; हर संख्या काल, क्रिया, नाप, तौल के रूप में

परंपरा धर्म के लक्षण बताती है न कि धर्म को

विवेक और विज्ञान के मूल में ज्ञान ही प्रधान वस्तु।

ज्ञान+विवेक+विज्ञान= समझदारी

ज्ञाता = जीवन; अनुभव सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व में संपन्न; सह–अस्तित्व =परम सत्य; अनुभव की निरंतरता

सत्य की कल्पना शाश्वत, सुन्दर, कल्याण रूप में

कल्याण– दुख, क्लेश, भ्रम मुक्ति

न्याय, धर्म, सत्य ही सार्थक संवाद का आधार

संवाद– मानव परंपरा में एक सहज कार्य, सर्वशुभ की कामना समाई; चाहना और संभावना का संयोग बिन्दु = शुभ परंपरा; इस हेतु चेतना विकास मूल्य शिक्षा–संस्कार द्वारा मानवीय शिक्षा, व्यवस्था, संविधान व मानवीयतापूर्ण आचरण को बोधगम्य कराना जरूरी

मानवत्व=जागृति=समझदारी

पदार्थ अवस्था का मूल परमाणु, अणु; प्राण अवस्था का मूल प्राण, प्राणकोषा

जीवन गठनपूर्ण परमाणु, अक्षय शक्ति, बल संपन्न

द्रोह, विद्रोह, शोषण, गलती, अपराध, युद्ध, शक्ति केंद्रित शासन– स्वयं पर गुजरने में विरोध, असहमति व संसार में घटित होने में सहमति

उलझन एक मजबूरी, बाध्यता; सुलझना समझदारीपूर्वक संभव; इच्छा हर मानव में निहित

जाने बिना मानना– रूढ़िवादिता; जानते हुए नहीं मानना एक अंतर्विरोध; जानना, मानना ही परंपरा में प्रमाण का आधार, क्रियान्वयन होने की स्थिति में पहचानना, निर्वाह करना; निश्चयों के साथ ही जानने, मानने का प्रयोजन प्रमाणित; स्थिरता, निश्चितता के आधार पर ही स्थिति, गति प्रयोजनशील होना

अनुभवमूलक विधि से ही अखण्डता व सार्वभौमता प्रमाणित, स्वीकृति हर मानव में

हर निश्चयन निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण की सहज प्रक्रिया से निश्चित, ध्रुवीकृत

स्थिरता, निश्चियता का बिन्दु – सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व; व्यापक(स्थिर और पारदर्शी, पारगामी के रूप में वैभव; फलस्वरूप इकाई ऊर्जासंपन्न; फलस्वरूप बलसंपन्नता, क्रियाशीलता= श्रम, गति, परिणाम) + इकाई(निश्चित आचरण सहित यथास्थिति के रूप में स्थिर)

अध्ययनपूर्वक बोध होना, बोधगम्य समझदारी प्रमाणित करने के अर्थ में अनुभव होना पाया जाता है; अनुभव + बोध= समझदारी= ज्ञानत्रय

जनवादः– संवादपूर्वक समझदारीपूर्ण विधि से व्यवहार का ध्रुवीकरण

वर्तमान में मानव, मनाकार को साकार करने में सार्थक, साथ में मनःस्वस्थता की पीड़ा बलवती; इस स्थिति में शोध की दिशा व लक्ष्य समझ में आना जटिल

अध्याय 4

व्यवहारवादी विचार की चर्चा

लक्ष्य व दिशा निश्चयन हेतु संवाद, न्यायपूर्वक जीने हेतु व्यवहार, व्यवहार में समाधान को प्रमाणित करना प्रमुख लक्ष्य

पीड़ा, दुख, भय का कारणः भ्रम, प्राकृतिक प्रकोप, जीवों का आचरण, रोग

भ्रम का कारण – मानव परंपरा(प्रधानतः शिक्षा–संस्कार, राज्य व्यवस्था, धर्म व्यवस्था) का जागृत न होना

मानवीयता ही मानव में एकता का एकमात्र सूत्र

वर्तमान में सभी धर्मों में कट्टरता, समुदाय मानसिकता, संकीर्णता, परस्परता में मतभेद, उपेक्षा, घृणा; स्वयं को श्रेष्ठ मानना

समस्याओं का निवारण समाधान से;

समाधान=समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी

श्रेष्ठता = परम ज्ञान, परम दर्शन, परम आचरण

अध्याय 5

मानव का मूल रूप– प्रवृत्तियों के आधार पर

मानव का मानव के साथ व्यवहार

मानव का मानवेतर प्रकृति के साथ उत्पादन–कार्य

सामान्य, महत्वाकांक्षा की वस्तुओं का प्रयोजन– शरीर पोषण,संरक्षण, समाज गति

ऊर्जा हेतु ईंधन; फलस्वरूप ताप वृद्धि, प्रदूषण(ईंधन अवशेष से); फसल की गुणवत्ता खराब, नदी, नाला सूखना, वनस्पतियों का शोषण, खनिज–दोहन; ऋतु असंतुलन, कृषि का व्यापारीकरण

कृषि लाभ–हानि मुक्त समृद्धिकारी वस्तु है। कृषि सर्वश्रेष्ठ, सर्वाधिक उपयोगी उत्पादन; कृषि हेतु धरती की ऊर्वरकता, जल संसाधन, बीज परंपरा, ऋतुकालीन कीट नियंत्रण औषधियों का ज्ञान, कर्माभ्यास के साथ पशुपालन एक अनिवार्य और अविभाज्य कार्य; पशुपालन– उर्वरक, दूध–घी, परिश्रम, हड्डी–चमड़े

<u>कृषि संपन्नता क्रम में समृद्धि प्रधान उद्देश्यः</u>

मानव परंपरा की सर्वप्रथम उपलब्धि– आहार

धर्म आधारित ⟶ विज्ञान आधारित राज्य(युद्ध सामग्री निर्माण के आधार पर)

तृप्ति, समाधान और प्रामाणिकता, प्रमाण एक दूसरे के पूरक

समझदारी स्वत्व रूप में, प्रयोग व व्यवहार करने के रूप में अधिकार, इसको सार्थक बनाने के लिए क्रियाकलाप के रूप में स्वतंत्रता

जीने का स्वरूप= आहार, विहार, व्यवहार, उत्पादन, कार्य का निश्चयन

आहार– शाकाहार, मांसाहार

मनवीयतापूर्ण आचरण(मूल्य,चरित्र,नैतिकता) पूर्वक व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित

मानव जीवन व शरीर के सह–अस्तित्व के रूप में; जीवन अपने कार्य गति पथ सहित एक इकाई; जीवन ही द्रष्टा,कर्ता,भोक्ता; शरीर को जीवंत बनाए रखता है। संज्ञानशीलता व संवेदनशीलता को प्रमाणित करने वाली इकाई; तृप्ति की अपेक्षा = सुख, शांति, संतोष, आनंद; प्रमाण= समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

वर्तमान में ईंधन का स्रोत– वन, खनिज, कोयला, विकिरणीय धातुओं की आवेशन प्रणाली; इनका अवशेष ही प्रदूषण का कारण

विकिरणीय धातु ब्रह्माण्डीय किरणों के रूप में कार्यरत; सदा–सदा भौतिक–रासायनिक क्रियाओं को सुदृढ़ व क्रमिक विकास से जोड़ने का अनुपम कार्य

विकिरणीय विधि से पानी का धरती पर निर्माण– वन–खनिज से संतुलित– ऋतु संतुलन– वन्य प्राणियों में संतुलन, समृद्धि– मानव का अवतरण

अप्रत्याशित घटनाएँ :– प्रदूषण, तापवृद्धि, ध्रुवीय बर्फ पिघलकर समुद्र का जल स्तर बढ़ना, नये–नये रोग, विकिरणीय परीक्षण से भूकंप की घटनाएँ बढ़ना, सामरिक तंत्र, अननुपाती विधि से वन–खनिज का शोषण, रासायनिक खाद–कीटनाशक, मिलावट

चौमुखी असमानता का कारण मनुष्य; अस्तित्व में इसका आधार नहीं

असमानता निराकरण हेतु– ज्ञान व विद्वता का लोकव्यापीकरण, फलस्वरूप समाधान, समृद्धि, प्रमाणित; अभय, सह–अस्तित्व का व्यवस्था में प्रमाण

मानव में स्वस्थता= समाधान संपन्न मानसिकता व रोगमुक्त शरीर= जागृति को प्रमाणित करने योग्य शरीर

शरीर में निरोगिता= स्वास्थ्य= सप्त धातुओं का संतुलन

प्रक्रिया = कुशलता, निपुणता, पांडित्यपूर्वक किये जाने वाले कृत, कारित, अनुमोदित कार्य

हर लक्ष्य को पाने के क्रम में पद्धति, प्रणाली, नीति

नीति= नियति विधि= नियति क्रम, नियति लक्ष्य के संतुलित कार्यकलाप

प्रणाली= सोपानित कार्यक्रमों को पहचानना, निर्वाह करना; कड़ी से कड़ी जुड़ा होना; लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया गया संपूर्ण क्रियाकलाप

पद्धति= लक्ष्य(कुशलता, निपुणता, पांडित्य) के लिए सभी उपकरण, साधन(मन की तत्परता + शरीर का सँजोया होना + द्रव्यों को सँजोकर घर आदि बनाना) को सार्थकता के अर्थ में संजो देना

अध्याय 6

व्यवहार– मानव परंपरा के साथ :

व्यवहारः– मानव–मानव की परस्परता में लक्ष्य संपन्न होने के अर्थ में किया गया क्रिया, प्रक्रिया, वाद, संवाद

लक्ष्यः– संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित

मूल्य, नीति,चरित्र पूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित

समाधान समृद्धि पूर्वक जीने में संवेदनाएँ नियंत्रित

परिवार से विश्व परिवार व्यवस्था में भागीदारीपूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित

जीव संसार संवेदनशीलता की निर्वाह विधि से प्रमाणित आचरण– वंशानुषंगी विधि, आशाधर्मी

वनस्पति संसार की पहचान गुण (सारक–मारक) के आधार पर – बीजानुषंगी विधि, पुष्टि धर्मी; सारक– जीव संसार के अनुकूल

वायु संतुलनः चारों अवस्थाओं की पूरकता के आधार पर

मानवीय शिक्षा संस्कार पूर्वक मानवत्व को पहचानना सहज

मानवत्व= मानवीयतापूर्ण आचरण सहित परिवार में व्यवस्था का प्रमाण व समग्र व्यवस्था में भागीदारी

भ्रमित विधि से शृंगारिकता(भोगोन्माद, कामोन्माद), पराक्रम(भोगशक्ति, युद्धशक्ति), उपकार को पहचानने की कोशिश

विज्ञानवाद व आदर्शवाद (दोनों व्यक्तिवादी) से मानव–सर्वशुभ का मार्ग नहीं; सर्वशुभ हेतु मानवीय शिक्षा(मानव का अध्ययन एक मुख्य भाग)

मानवीय शिक्षा का प्रारूप:

मानव + मानवीयता का अविभाज्य रूप

संवेदनाएँ नियंत्रित होना परस्परता में विश्वास का महत्वपूर्ण आधार; मर्यादा का सम्मान अत्यावश्यक स्वीकृति

शिक्षा संस्कार पूर्वक ही दिशा, उद्देश्य, कर्तव्य का निर्धारण

दायित्व व कर्तव्य का निर्वाह= व्यवहार सूत्र

संबंध में संबोधनों के साथ प्रयोजनों को पहचानते हुए निर्वाह करना

व्यवहार/समाज व्यवस्था = मानव में से के लिए लक्ष्य सम्मत जीने की विधि , विधान , कार्य, व्यवहार

मानवीयता, देवमानवीयता– परिवार व समाज व्यवस्था मानवीयतापूर्ण आचरण सहित प्रमाणित

दिव्य मानवीयता = समग्र व्यवस्था में भागीदारी पूर्वक स्वतंत्रता व स्वराज्य प्रमाणित

स्वराज्य– व्यवस्था के 5 आयाम का निर्वाह;

परिवारमूलक विधि से 10 सोपानीय व्यवस्था

हर परिवार से 1 व्यक्ति समग्र व्यवस्था में भागीदारी(पावन व उपकारी कार्य) हेतु अर्पित; समाधान, समृद्धि पूर्वक जीते हुए हर परिवार उपकार में प्रवृत्त

वर्तमान समस्या – भ्रष्टाचार, आरक्षण(प्रतिभा का संकट), अनुदान(देकर वापस नहीं लेना):– इनसे असंतुष्टों की तादाद में वृद्धि

राजतंत्र, गणतंत्र दोनों शक्ति केंद्रित शासन, पैसा व पद बँटवारे से संतुष्टि का प्रयास

जनप्रतिनिधि :– अभिनय कार्य, समुदाय विधि से सोचना, खाना–पीना, ऐशो–आराम संग्रह–सुविधा ही लक्ष्य, प्रतिफल की अपेक्षा, व्यक्तिगत संपदा को बढ़ाना, संविधान रक्षा की अपेक्षा परंतु संविधान विरोधी कार्य, समाज, नियति, वन–खनिज विरोधी कार्य

क्या स्वीकृत है – शासन/व्यवस्था?

दरिद्रता= मानव लक्ष्य सफल होने व्यवस्था के पाँचों आयाम में भागीदारी करने में विपन्नता

संपन्नता(=सुख) का वैभव= जागृति, सर्वतोमुखी समाधान, न्यायपूर्वक जीना, उपकार कार्य में निष्ठा, समृद्धि को प्रमाणित करना, व्यवस्था में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी, सह–अस्तित्व को प्रमाणित करना, सह–अस्तित्व(में) अनुभव करना, अनुभवमूलक विधि से संपूर्ण को अपने में स्थिर होने के रूप में स्पष्ट करना, व्यवस्था में निहित कार्यकलापों को स्पष्ट करना, देव, दिव्य मानव होना(स्वयं को प्रमाणित करना), स्वतंत्रता, स्वराज्य को प्रमाणित करना

जागृति ही संपन्नता, न कि सुविधा संग्रह

रूप के साथ–सच्चरित्रता, बल के साथ दया, धन के साथ उदारता, पद के साथ न्याय, बुद्धि के साथ विवेकपूर्वक मानव सुखी

समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में राष्ट्रीय चरित्र प्रमाणित

राष्ट्रीय चरित्र का प्रारूपः

प्रमाणित होने के क्रम में स्वतंत्रता एवं स्वराज्य; मानवत्व ही सर्वमानव वैभव, स्वतंत्रता व स्वराज्य ही प्रमाण

स्वराज्य= स्वयं का वैभव

वर्तमान में विभिन्न वर्ग, मत, समुदाय, जाति; परस्पर द्रोह, विद्रोह, युद्ध

निराकरण हेतु– ''मानव जाति एक कर्म अनेक, धरती एक राज्य अनेक, मानव धर्म एक मत अनेक''

वर्तमान में स्वराज्य= मनमानी रूप से जीने की छूट; शासन= संविधान के अनुसार जीना; सरकार= गद्दी परस्त जो कहे वही सही, बाकी सब गलत; न्याय में निर्णय के साथ सुधार का कोई कार्यक्रम नहीं; इन तीनों विधि से ग्राम स्वराज्य कारगर नहीं

समझदारी पूर्वक ही मानव का आचरण निश्चित, स्थिर

समझदारी का फलन= स्वायत्त मानव (6 सद्गुण संपन्न); ऐसा जीना= स्वतंत्रता; फलस्वरूप व्यवस्था के 5 आयाम में स्वतंत्रता स्वयंस्फूर्त विधि से सफल=स्वराज्य

स्वतंत्रता व स्वराज्य का अविभाज्य संबंध

स्वतंत्रता– समाधानित मानव में, से, के लिए कृत, कारित, अनुमोदित विधि से किया गया संपूर्ण क्रियाकलाप

स्वराज्य– स्वतंत्रता के परिणाम की पहचान

पद, पैसा, प्रतिष्ठा के आधार पर स्वराज्य व्यवस्था असफल

यंत्र व पुस्तक प्रमाण की जगह मानव प्रमाण

मानव की पहचान के आधार पर मानवीय संविधान का स्वरूप स्पष्ट

=मानव की परिभाषा, आचरण, व्यवस्था, व्यवस्था में भागीदारी के संयुक्त वृत्त रूप में

मानव की परिभाषा– मनाकार को साकार करना; मनःस्वस्थता को प्रमाणित करना
आधार= ज्ञानत्रय, समझदारी

आचरण का आधार= ज्ञानद्वय= मूल्य, चरित्र, नैतिकता(तन,मन,धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा)

सदुपयोग– शरीर पोषण, संरक्षण व समाज गति के अर्थ में नियोजन

समाज गति– अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

व्यवस्था– दस सोपानीय व्यवस्था

व्यवस्था में भागीदारी– परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था तक पाँचों आयाम में भागीदारी

तकनीकी, प्रौद्योगिकी का लोकव्यापीकरण, न कि पेटेंटीकरण; लोकव्यापीकरण पूर्वक ही अभ्युदय(=सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक जीने की सहज प्रक्रिया)

प्रतिभा= ज्ञान, समझदारी; प्रतिभा का प्रमाण= स्वायत्त मानव

=ज्ञान, दर्शन के प्रतिपादन का प्रयोजन प्रमाणित करने की प्रवृत्ति

जागृति मानव शरीर परंपरा में ही प्रमाणित;

जीवन में कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता; समृद्ध मेधस युक्त शरीर रचना

अध्याय 7

व्यवहारवादी कार्यकलापः– संपूर्णता में व्यवहार= संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था

आचरणः– संस्कृति, सभ्यता का प्रमाण रूप

संस्कृति का प्रमाण चरित्र; सभ्यता का प्रमाण मूल्य

संस्कृति, सभ्यता दोनों के आधार पर नैतिकता का स्वरूप स्पष्ट

मानवीयतापूर्ण आचरण को हर विधा में पहचानने की विधि सहित संविधान= मानवीय संविधान

जीवनाकांक्षा के संदर्भ में साधना, अभ्यास, योग, ध्यान; ध्यानपूर्वक ही समझदारी संपन्न; मन को लगाए रखना ही ध्यान= सटीक सुनना; उपलब्धि– स्मरण तंत्र तक पहुॅचना

उद्देश्यों के साथ मन का लगना सहज; आवश्यकता के आधार पर मन लगना सहज; अर्थ स्वीकृत होना ही बोध, अर्थ बोध होना ही अध्ययन अर्थ बोध का प्रमाण= अस्तित्व में वस्तु का बोध होना= सह–अस्तित्व बोध

सर्वतोमुखी समाधान से समस्या मुक्ति

सर्वतोमुखी समाधान का धारक–वाहक केवल मानव

ज्ञान तंत्रणा की भनक मानव जाति को सुदूर विगत से; लोकव्यापीकरण न होने की स्थिति में स्वर्ग–नरक, यज्ञ, दान,तप, परोपकार

आदर्शपूर्ण व्यक्तित्व सामान्य लोगों के लिए कठिन

आदर्शों का प्रयोजन फल लोकव्यापीकरण न होना,

प्रश्न– उपकार कैसे होगा, उपकार विधि का लोकव्यापीकरण कैसे होगा; यंत्र निर्माण कुछ लोगों के हाथ में या हर नर–नारी को रोजमर्रा की यंत्र निर्माण विधा में पारंगत होना आवश्यक

शिक्षा संस्कार एवं तकनीकी शिक्षापूर्वक उत्पादन संबंधी तकनीकी प्रणाली, पद्धति सुलभ(ग्राम के स्तर पर)

होने का स्वरूप व वातावरण दोनों ही सह–अस्तित्व दर्शन से स्पष्ट

विश्लेषण विधि से संपूर्ण प्रकार का वस्तु ज्ञान, वस्तु ज्ञान के साथ संयोजन ज्ञान के साथ परिणाम व प्रयोजन ज्ञान हुआ रहता है। इन सभी आधारों के साथ निर्णय होना सहज; सह–अस्तित्व विधि से जीकर हम प्रमाणित

अस्तित्व= 4 अवस्था(पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान); 4 पद (प्राण, भ्रांति, देव, दिव्य)

पदार्थ अवस्था का मूल भौतिक परमाणु (कुल 120, 60 भूखा, 60 अजीर्ण); चैतन्य परमाणु की एक ही प्रजाति; कार्य गति पथ सहित जीवन अपने में एक आकार–प्रकार, आशा की गति से गतित, गति का संख्याकरण संभव नहीं; जागृतिपूर्वक जीने में जीवन लक्ष्य व मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना ही कार्यक्रम

अस्तित्व में है व होने का अध्ययन

भय व प्रलोभन के आधार पर आवेश; आवेशित स्थिति में ही झगड़ा; जागृतिपूर्वक सह–अस्तित्व में जीना

जागृति में समाधान का उदय होने पर समाधानात्मक भौतिकवाद की सार्थकता परमाणु में विविध प्रजाति, विकास व विकासक्रम का अध्ययन

जनवाद का प्रयोजन अध्ययन संवाद क्रम में सकारात्मक पक्ष को स्वीकारना

अध्यात्मवाद – अध्यात्म, प्रकृति/एक–एक वस्तुएँ/जड़–चैतन्य/भौतिक–रासायनिक, जीवन क्रियाकलाप व्यापक वस्तु में संपृक्त होने का बोध; बोध को प्रमाणित करने के क्रम में अनुभव; फलस्वरूप संज्ञानशीलता/सर्वतोमुखी समाधान प्रमाणित

मानवसंचेतनावादी मनोविज्ञान

मानवसंचेतना= संज्ञानशीलता + संवेदनशीलता

संज्ञानशीलता– मानव लक्ष्य के अर्थ में जीना/जागृतिमूलक मानसिकता

प्रश्न :– मूल्यमूलक विधि से जीना या रूचिमूलक विधि से जीना?

व्यवहारवादी समाजशास्त्र : मानव–मानव के साथ न्याय, समाधान, सह–अस्तित्व प्रमाण पूर्वक जीने के तथ्यों का बोध; फलस्वरूप सह–अस्तित्व व जीवन बोध सहित व्यवस्था में जीना

आवर्तनशील अर्थशास्त्र : श्रम ही मूल पूंजी; प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजनपूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य स्थापना; उपयोगिता व कला मूल्य के आधार पर वस्तुओं का मूल्यांकन; परिवार सहज विधि से उत्पादन, हर मानव की भागीदारी; फलस्वरूप समाधान, समृद्धि पूर्वक जीना; विनिमय श्रम मूल्य के मूल्यांकन के आधार पर संपन्न(शोषण मुक्त विधि से)

व्यवहार दर्शन :– अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था इसकी आवश्यकता का बोध; व्यवहार में नियम त्रय का बोध

कर्मदर्शन :– कृत, कारित, अनुमोदित, कायिक, वाचिक, मानसिक भेदों से कर्म; कार्य का स्वरूप 9 प्रकार से – उत्पादन कार्य, व्यवहार कार्य, व्यवस्था कार्य;

लक्ष्य–मानवाकांक्षा को प्रमाणित करना; कर्म की सार्थकता व कैसे किया जाए का स्पष्टीकरण; कायिक, वाचिक, मानसिक एकरूपता/संगीतमयता हेतु मध्यस्थ दर्शन, सह–अस्तित्ववाद

अभ्यास दर्शन :– समझदारी के लिए अभ्यास; समझदारी के उपरांत प्रमाणित करने की अभ्यास विधियों का स्पष्टीकरण, अध्ययन

जीवन समुच्चय– द्रष्टा पद प्रतिष्ठा सहित कर्ता, भोक्ता पद में प्रमाण

दृश्य= संपूर्ण अस्तित्व= व्यवस्था= नियम, नियंत्रण, संतुलन रूप में= जड़–चैतन्य प्रकृति= त्व सहित व्यवस्था, फलतः समग्र व्यवस्था में भागीदारी

अनुभवमूलक विधि से मानव चेतना सहज प्रमाण; अनुभवमूलक विधि से मानव प्रमाणित; अनुभव ही सर्वतोमुखी समाधान का स्रोत

मनुष्य में कल्पनाशीलता व कर्मस्वतंत्रतावश तर्क का उद्घाटन

मानव जाति, धर्म, ईश्वर, व्यवस्था, सत्य के मुद्दे पर विविधता; विविधता के मुद्दों पर पुनः विचार , परामर्श, विश्लेषण, विवेचना सहित सार्वभौम स्वीकृति आवश्यक

संख्या, दिन, परमाणु, 4 अवस्थाओं की स्वीकृति में समानता

निर्णय लेने के रूप में सभा; क्रियान्वयन क्रम में परिवार

हर निर्णय सर्वसम्मति के रूप में सार्थक; इस हेतु संवाद(फलस्वरूप एक–दूसरे की मानसिकता, प्रयोजन,फल, परिणाम का बोध)

समझदारी की वस्तु= सह–अस्तित्व; प्रमाणीकरण की वस्तु= सह–अस्तित्व

अनुभवमूलक विधि, व्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता, व्यवस्था के 5 आयाम= स्वतंत्रता, स्वराज्य

परिवार में समझदारी से मानसिकता से कार्य–व्यवहार से फल–परिणाम से समाधान–समृद्धि प्रमाणित

परस्परता में विश्वास आवश्यक; जीवन लक्ष्य व मानव लक्ष्य प्रमाणित होने के आधार पर सफल

परिवार समूह का कार्य – परिवार की परस्परता में न्याय, पूरकता को बनाए रखना= संतुलन

संस्कृति सभ्यता में एकरूपता, कला व उत्पादन क्रियाओं में प्रोत्साहन, समाज गति में भागीदारी (हस्त शिल्प, उद्योग)

सदस्य के निर्वाचन की कालावधि– अनुकूलता के आधार पर ; जनप्रतिनिधि को मानदेय की आवश्यकता नहीं

10 जनप्रतिनिधि मिलकर हर व्यवस्था कार्य (5 आयाम में पारंगत) को कर पाने में समर्थ, इसके लिए समय व प्रक्रिया निर्धारित कर पाने में समर्थ

हर परिवार में सामान्य चिकित्सा ज्ञान, शरीर रचना ज्ञान, शरीर संतुलन का ज्ञान; कर्माभ्यास कम, ज्यादा हो सकता है।

हर प्रतिनिधि मानवीयतापूर्ण आचरण में निष्ठान्वित, प्रमाणित– व्यवस्था की पहली कड़ी

हर गाँव में प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान; शिक्षा की मूल वस्तु – अक्षर ज्ञान, सह–अस्तित्व, जीवन ज्ञान तक क्रमिक पद्धति

गाँव के हर नर–नारी द्वारा शिक्षा कार्य संपन्न

दूसरी विधि से हर शाला के साथ हर अध्यापक के लिए निवास, साथ में ग्राम शिल्प की कार्यशाला+ 5 एकड़ जमीन + 5 गाय(पूरे गाँव के संयोजन से संपन्न)

व्यवस्था की दूसरी कड़ी में सुरक्षा कार्य; समझदार परिवार होने के आधार पर गलती व अपराध की संभावना नहीं; प्रवृत्ति उदय होने से घटना तक पहुँचने के पहले सुधार की व्यवस्था; गलती, अपराध की मानसिकता को पहचानने का दायित्व परिवार, परिवार समूह, ग्राम सभा पर; गलती, अपराध की मानसिकता को सुधारने का दायित्व परिवार, परिवार समूह, ग्राम सभा में निष्णात व्यक्तियों पर

मूल्यांकन – आवश्यकतानुसार(1,6,12 महीने में)

किसी परिवार में श्रेष्ठता की आवश्यकता होने पर परिवार समूह, ग्राम सभा द्वारा उसकी भरपाई

उत्पादन कार्य– तीसरी कड़ी

कृषि, पशुपालन, ग्रामशिल्प, हस्त शिल्प ग्रामोद्योग (ऊर्जा संतुलन कार्यरत)

ईंधन व प्रकाश स्रोत – गोबर गैस, सूर्य ऊर्जा, वायुतरंग, कचरा गैस

न्याय सुलभ होने में भरोसा, न्यायपूर्वक जीने में विश्वास ही ग्राम स्वराज्य सफल होने का बिन्दु

आहार, आवास, अलंकार की वस्तु के गाँव में उत्पादन को वरीयता

महत्वाकांक्षा की वस्तु को संभालने के संदर्भ में कर्माभ्यास

कृषि में बीज, उर्वरक, कीटनाशक औषधि पानी की स्वायत्तता

पाताली जल स्रोत का 4 गुणा वर्षा जल जमा करने की आवश्यकता

विनिमय कोष – चौथी कड़ी

आवश्यकता से अधिक उत्पादन का कोष में एकत्रीकरण; पड़ोसी ग्राम(ग्राम समूह) में विनिमय; फलस्वरूप ईंधन, श्रम, यंत्र की बचत

स्वास्थ्य संयम – 5वीं कड़ी

ध्रुव बिन्दु = स्वस्थ मानसिकता

घरेलू व वनौषधि का प्रयोग

व्यायाम, आसन, प्राणायाम, खेल

इन 5 कड़ियों के संचालन हेतु 5 समिति – हर समिति में स्थानीय आवश्यकतानुसार सदस्य

इस प्रकार ग्राम सभा(ग्राम स्वराज्य वैभव का तृतीय सोपान) प्रमाणित

ग्राम समूह स्तर पर विद्याशाला , विद्यार्थियों को पहुँचाने के लिए गतिशील साधन उपलब्ध

ऐसे अध्यापक विद्वान द्वारा संस्कार कार्य, उत्सव, समारोह का संपादन (अक्षराभ्यास उत्सव)

स्वतंत्र उत्सव, मूल्यांकन उत्सव, कार्यक्रम उत्सव ग्राम/ग्राम समूह परिवार सभा द्वारा संचालित

न्याय–सुरक्षा के अनसुलझे मुद्दों को सुलझाने का कार्य; इस हेतु समीक्षा व मूल्यांकन प्रक्रिया

इसी तरह बाकी सभी आयाम में

क्षेत्र परिवार सभा – पाँचवां सोपान

उत्तर माध्यमिक शालाएँ व स्नातक शालाएँ क्रमविधि से कार्यरत

मँझोले व छोटे उद्योग

आकस्मिक घटनाग्रस्त, दुर्घटनाग्रस्त, असाध्य रोगों के शमन हेतु चिकित्सा केंद्र – सेवा, उपकार के रूप में चिकित्सा कार्य; विविध प्रकार के व्यायाम की व्यवस्था

6ठा सोपान – मंडल परिवार सभा

स्नातक व स्नातकोत्तर शिक्षा; अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का संपूर्ण तकनीकी, विज्ञान, विवेक कर्माभ्यास संपन्न

न्याय–सुरक्षा, विश्वास व अभयता का प्रधान कार्यक्रम

वृहत् उद्योग, नीचे के सोपान के उद्योगों का मूल द्रव्य तैयार करने का काम

स्वास्थ्य को संभाले रहने का ज्ञान, उपाय, कर्माभ्यास कराने की व्यवस्था; असाध्य घटनाग्रस्त स्थिति से उबरने की व्यवस्था

7वां सोपान– मंडल समूह परिवार सभा

देवमानव, दिव्यमानव को प्रमाणित करते हुए दृढ़ता संपन्न विधि से शिक्षा संस्कार कार्य; अति सूक्ष्मतम अध्ययन, शोध प्रबंधों को तैयार करने की व्यवस्था; शोध प्रबंधों का मूल उद्देश्य मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था को मधुरिम, सुलभ बनाना

न्याय सुरक्षा हेतु आवश्यकीय सभी दूरसंचार उपलब्ध

बड़े उद्योग, यान–वाहन, दूरसंचार यंत्र व उपकरण– शोध व कर्माभ्यास की व्यवस्था

8वां सोपान –मुख्य राज्य सभा

सर्वोत्कृष्ट समाज गति, 4 आयाम का शोध संयुक्त रूप में – शिक्षा संस्कार कार्य में

राज्य यातायात – रेल आदि, बड़े–बड़े वाहन

स्वास्थ्य –संयम हेतु साधन की पूर्ति उत्पादन कार्य से

9वां सोपान – प्रधान राज्य सभा

संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था की सार्थकता एवं समग्र व्यवस्था की सार्थकता के आँकलन पर आधारित श्रेष्ठता हेतु अनुसंधान शोध, शिक्षण, प्रशिक्षण, कर्माभ्यास(प्रौद्योगिकी की विधा में), व्यवहाराभ्यास (प्रमाणीकरण की प्रधानता)

श्रेष्ठता – प्रबंध, निबंध, कला, प्रदर्शन, साहित्य, मूर्तिकला, चित्रकला के आधार पर मूल्यांकन व सम्मान

न्याय सुरक्षा :– परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था को पड़ोसी राज्य में प्रवाहित करने के लिए सभी उपायों का प्रयोग

उत्पादन कार्य – वायुयान, जल, वायु, समुद्र प्रवाह से विद्युत

स्वास्थ्य संयम – प्रौद्योगिकी में कार्यरत व्यक्तियों की चिकित्सा संपन्न होगी

10वां सोपान – विश्व परिवार राज्य सभा

शिक्षा संस्कार :– प्राकृतिक, जीव, मानव संतुलन

जलवायु, ऋतु, धरती, वन–खनिज संतुलन संबंधी अध्ययन की व्यवस्था

न्याय सुरक्षा – मानव/समाज न्याय, लोक कल्याण कार्यों में श्रेष्ठता

उत्पादन कार्य – उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता का मूल्यांकन

सामरिक तंत्र तब तक आवश्यक, जब तक परस्पर राज्यों में पूर्ण विश्वास, एकरूपता का सेतु न बन जाए

विश्व सुरक्षा समिति – सभी प्रधान राज्य सभा के एक–एक प्रतिनिधि निर्वाचित विधि से प्रस्तुत

थोड़े दिन उपरांत सामरिक यंत्र सर्वथा निरर्थक – दूसरे धरती से आक्रमण की परिकल्पना

जागृतिक्रम–जागृति एक सहज प्रक्रिया

जागृत मानव मानसिकता का स्वरूप सभी धरती पर एक; द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता पद निश्चित

विकिरणीय ऊर्जा पर संतुलन का नजरिया सुस्पष्ट रहने की आवश्यकता

विकिरणीय ऊर्जा व विद्युत ऊर्जा अति महत्वपूर्ण

दूरसंचार विधि से एक दूसरे कड़ियों के साथ अनुप्राणित(अनुक्रम से प्रेरणाएँ, सूचनाएँ पहुँच पाना), प्रतिप्राणित(प्राप्त सूचनाओं के अनुसार अपेक्षित परिणामों से अवगत होना); फलस्वरूप समुदाय मानसिकता, संग्रह, सुविधा भोग, अतिभोग मानसिकता, द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, मिलावट, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार जैसे अभिशाप से मुक्ति

मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना ही सुख–शांति पूर्ण जिंदगी का प्रमाण

अध्याय 8 जनचर्चा की आवश्यकता

कारण, गुण, गणितात्मक भाषापूर्वक मानव अभिव्यक्त; जागृति व जागृतिपूर्णता की निरंतरता हेतु संवाद/अभिव्यक्ति आवश्यक

जनचर्चा ही शिक्षा–संस्कार का शिलान्यास/वातावरण का सूत्रः

तथ्यों को जानने, मानने, पहचानने हेतु संवाद; अध्ययनपूर्वक सुस्पष्ट होने की ज्ञान, कर्म, व्यवस्था मिमांसा मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद में स्पष्ट; यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता तक पहुँचने हेतु संवाद

जनचचा में सामाजिक सूत्रों का उद्घाटन

– आशय व तथ्यों के प्रति विश्वास जताना, परस्परता में स्वीकृति की एकरूपता को पहचान पाना ही परस्परता में दृढ़ विश्वास का आधार; यही समाज का सूत्र संवादपूर्वक सूत्रों से अवगत, तदोपरांत प्रमाणित

जनचर्चा में सह–अस्तित्व की अपेक्षा :– अति त्रिदोष व अज्ञान से प्रलाप(एक रोगी मानसिकता)

मानव के साथ ही सार्थक संवाद; फलस्वरूप समाधान(समझने व फल–परिणाम में एकरूपता)

जनचर्चा में वास्तविकता को परखने, यथार्थता को उद्घाटित करने, सत्यता को स्वीकारने की विधिः–

व्यापक + प्रकृति (4 अवस्था, 4 पद) का अध्ययन

वस्तु कैसा= त्व सहित व्यवस्था(क्रम में हर वस्तु स्वभाव गति में गति होती है) + समग्र व्यवस्था में भागीदारी;

व्यवस्था का मूल रूप परमाणु; त्व सहित व्यवस्था के रूप में पहचान ही वास्तविकता है। मानव व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना ही यथार्थता; स्वभाव गति= वास्तविकता; सत्यता= सह–अस्तित्व विधि से नित्य वर्तमान

जनचर्चा में मानवाकांक्षा का प्रबल स्थान– संवाद का अंतिक लक्ष्य– मानवाकांक्षा को पहचानना एवं उसे प्रमाणित करना; समाधान तक पहुँचने से पहले तृप्ति बिन्दु मिलता नहीं

जनचर्चा में मानवीयतापूर्ण योजनाओं की स्वीकृतियाँ–सार्थकता का मूल स्वरूप मानवीय व्यवस्था(स्वराज्य व्यवस्था)में भागीदारी

भ्रमित स्थिति में:– स्वयं अव्यवस्थित, दूसरे से व्यवस्था की अपेक्षा; स्वयं समस्या का प्रसवन, अन्य से समाधान की चाहना; मानवीयतापूर्ण पद्धति से ही योजना, कार्य योजना, व्यवहार योजन सार्थक

जनचर्चा में उत्सवों की परिकल्पना:

उत्सव = धैर्य व उत्साहपूर्वक समझदारी, मानव लक्ष्य के लिए किया गया प्रयास

वर्तमान में उत्सव भय, प्रलोभन, अपराध व शृंगारिकता की सीमा में; सर्वथा असामाजिक; रोमांचकता=उत्साह; जबकि यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता (को उद्घाटित करना)ही उत्सव (का आधार)

जनचर्चा में क्रीड़ा विनोद की परिकल्पना:– क्रीड़ा स्वास्थ्य वर्द्धन के लिए अनुकूल कार्यक्रम; वर्तमान में साहित्य, कला, नौटंकी, मंचन, प्रदर्शन– अपराध, शृंगारिकता, भोग उन्माद हेतु

विनयपूर्वक प्रसन्नतापूर्वक की गई प्रस्तुतियाँ(मुद्रा,भंगिमा, अंगहार सहित); सार्थकता की ओर ध्यानाकर्षण कराने हेतु; लक्ष्य, स्वायत्त मानव का स्वरूप स्पष्ट करने हेतु

क्रीड़ा व्यापार विधि से असफल

जनचर्चा में मूल्यांकन का स्थान और प्रयोजन

मूल्यांकन मानव परंपरा की एक अनिवार्य प्रक्रिया प्रणाली; मानव लक्ष्य (समाधान, न्याय, नियंत्रण)के आधार पर मूल्यांकन; समझदारी से व्यवस्था में जीना एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी की मानव का मूल्यांकन; वस्तुओं का मूल्यांकन उपयोगिता मूल्य के आधार पर

जनचर्चा में समीक्षा का स्थान और आवश्यकता

समीक्षा–

पूर्णता के अर्थ में निरीक्षण, परीक्षण और उसका उद्घाटन (अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन)

मानव परंपरा में घटित संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था की समीक्षा

समीक्षा में मूल्यांकन(सार्थकता) का अर्थ समाहित

आदर्शवाद से भक्ति–विरक्ति में समर्पित होकर व भौतिकवादी विधि से सुविधा–संग्रह के चक्कर में पड़कर व्यक्तिवादी; दोनों विधि से परिवार, समाज व्यवस्था व व्यवहार का संगीतमय स्वरूप निष्पन्न नहीं

अध्ययनपूर्वक मानव में बोध रूप में स्वीकृतियाँ; प्रमाणित करने की स्वयंस्फूर्त प्रवृत्ति; फलस्वरूप जागृत – स्वभाव गति प्रतिष्ठा, मानवत्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित

समीक्षापूर्वक सार्थक बिन्दुएँ वर्तमान में स्पष्ट, निरर्थक बिन्दुएँ समीक्षित होकर विगत; संपूर्ण असार्थकता, सार्थकता में विलय होना ही समीक्षा की भूमिका; मूल्यांकन पूर्वक ही आगे का कार्यक्रम सुनिश्चित

जनचर्चा में अभय, समाधान की पुष्टि और इसकी आवश्यकता:

भय से मुक्ति मानव कुल में अपेक्षित, पर मानव दूसरों के लिए भय पैदा कर रहा है– यही असमंजस की स्थिति है। जैसे– सामरिक तंत्र, द्रव्य, मिलावट, प्रदूषण, अपशब्द(भाषा)

प्रलोभन को मानव स्वीकार लेता है।

मानव लक्ष्यमूलक विधि से सुरक्षित/सुरक्षा का अनुभव करता है।

रूचिमूलक/भक्ति–विरक्ति विधि से सुरक्षा असफल

लक्ष्यमूलक विधि से तन(क्रियाशीलता, व्यवहार), मन(समाधान), धन(सामान्य, महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुएँ) रूपी अर्थ का सदुपयोग पूर्वक सुरक्षा; इनका सदुपयोग (शरीर पोषण, संरक्षण, समाज–गति के रूप में) ही सुरक्षा

चाहने के स्थान पर होना–रहना ही ज्ञान का प्रमाण

सह–अस्तित्ववादी मानसिकतापूर्वक समाधान और सुरक्षा पाकर सुख, शांति का अनुभव!